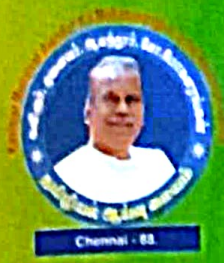

SHRI SHANKARLAL SUNDARBAI
SHASUN
JAIN COLLEGE FOR WOMEN

Women in Literary Arts

(International Conference)

HINDI

Editor

Dr. Saroj Singh

19th December
2024

Title of the book	: Women in Literary Arts
Language	: Hindi
Type of Book	: Articles
Editor	: Dr Saroj Singh
Paper	: NS Book print
Published by	: Poet Dr. Alandur KO.Moganarangan Research Centre for Tamil Studies, 26, Cross street, Joseph Colony, Adambakkam, Chennai - 88
Printed	: Universal Printer, Chennai-14
Edition	: December 2024
ISSN	: 2394 - 2428 (VETRIMUNAI)
Price	: Rs. 200/-
Pages	: 12 + 236 = 248

CONTENT

1 स्त्री विमर्श और अनामिका
Dr Manju Rustagi 1

2 स्त्री-पुरुष की परस्पर आश्रयता
Dr Neeraja GurramKonda 11

3 'मन्नतों के धागे' उपन्यास में महिलाओं में व्याप्त आस्था, विश्वास या अंधविश्वास
Dr. Harshalata V. Shah..... 18

4 'आँवा' उपन्यास में चित्रित स्त्री मुक्ति
Dr. B. Santoshi Kumari 26

5 अव्वैयार की साहित्यिक देन
Dr. P. Ezhil Nachiar 33

6 तमिल साहित्य मैं महिला साहित्यकार अव्वयार का योगदान - 'मूदुरई' के संदर्भ में
Dr. Poornima Srinivasan 41

7 भारतीय साहित्य में नारी
Dr. Sunil Patil 47

8 हिन्दी साहित्य के चुनिन्दा नारी पात्र - जनकल्याण के संदर्भ में
Dr. V Geeta Malini 58

9 डॉ. सुरीती रघुनंदन की 'अपनी अपनी मंज़िलें' में नारीवादी दृष्टिकोण का अध्ययन
Dr Saroj Singh 64

10 आधुनिक हिन्दी नाटक में नारी का बदलता रूप
Dr. Anupama. K..... 72

11 हिंदी साहित्य में महिला साहित्यकारों द्वारा नारी स्वरूप का चित्रण।
Dr. Kumar Abhishek..... 77

12 'पंचपन खंभे लाल दीवारें में व्यक्त अविवाहित नारी की समस्याएँ
Dr. K.Ananthi 84

तमिल साहित्य में महिला सहित्यकारों की देन : अव्वैयार के 'मूदुरई' के संदर्भ में

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
Asst.Professor and Head,
Dept.of Hindi
Vels Iinstitute of Science Technology
& Advanced Studies

प्रस्तावना :

भारतीय साहित्य परिदृश्य को कभी भी दोनों लिंगों द्वारा समान रूप से आकार नहीं दिया गया है। प्रायः इसमें पुरुष दृष्टिकोण हावी रहा है। दक्षिण भारत के परिप्रेक्ष्य में ऐसी कुछ महिला कवयित्रियाँ हैं जिन्होंने इस परंपरा को तोड़ा और तमिल साहित्य पर एक स्थायी छाप छोड़ी। संगम काल के दौरान तमिल कविता के शुरुआती दौर में महिलाएं प्रमुख भूमिका निभायी हैं। पांड्य, चोल और चेर के शाही संरक्षण में तीन संगम फले-फूले, जिनका अनुमान ईसा पूर्व 300 से 300 ईस्वी पूर्व के बीच था, जिसे तमिल इतिहास में संगम युग कहा जाता है।

इस युग में विभिन्न साहित्यिक रचनाएँ फली-फूलीं। पहला संगम, जो तत्कालीन मदुरै में आयोजित हुआ था, उसमें देवताओं और पौराणिक संतों ने भाग लिया। दूसरा संगम कपाडपुरम में आयोजित किया गया था। लेकिन तोलकाप्पियम को छोड़कर सभी साहित्यिक कृतियाँ नष्ट हो गईं। वर्तमान युग के मदुरै में तीसरे संगम की स्थापना मुडतिरुमारन ने किया। इसमें वड़ी संख्या में कवियों ने भाग लिया, जिन्होंने विशाल साहित्य का सृजन किया यथा अगनानूरु, कुरुन्तोगई, पुरनानूरु, मदुरैकांजी, नट्रिनई , नेडुनेलवाडै, तिरुक्कुरल, नालड़ियार, आदि। यह सत्य है कि प्राचीन तमिल समाज में अनेक कवयित्रियाँ हैं जिनकी काव्य प्रतिभा किसी भी तरह से कवियों से कमतर नहीं है। संगम काल की कवयित्रियों में से अव्वैयार, कावरपेंडु (पुराननुरू), काक्कयपाडिनियार, वेल्लिवीधियार, पोनमुडियार आदि उल्लेखनीय हैँ। उनमें से 'अव्वैयार' इस युग की प्रसिद्ध कवयित्री रहीं। अव्वैयार द्वारा संगम साहित्य में 58 कविताएँ लिखी गईं।

औवैयार - एक सामान्य परिचय:

औवैयार तमिल शब्द का तात्पर्य माँ, बूढ़ी औरत, एक सुप्रसिद्ध महिला कवयित्री से है। अव्वैयार नाम का अर्थ है 'सम्माननीय अच्छी महिला'। तमिल लोग अक्सर उनकी कल्पना एक बूढ़ी और बुद्धिमान महिला के रूप में करते हैं। उसका व्यक्तिगत नाम अज्ञात है। काव्यगत विशेषताएं, भाषा शैली, आदि को ध्यान में रखते हुए, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि औवैयार नाम के कई कवयित्री अलग-अलग युगों में रहे हैं। पुरानानुरू, अकनानुरु, नट्रिनई और कुरुन्दोगई नामक रचनावों की रचयिता औवैयार संगम काल की हैं।

एक अव्वैयार जो बारहवीं शताब्दी में चोल साम्राज्य के कवि कंबर और ओट्टकुतार के समकालीन हैं। उनके द्वारा छोटे बच्चों के लिए लिखी गई उनकी रचनाएँ जैसे 'आत्तिच्चूडि', 'मूदुरै', 'कोनड्रेय वेन्दन', नन्नूरकोवाई, नानमाणिक्कोवई, आदि आज भी आम तौर पर पढ़ी जाती हैं और उनका आनंद लिया जाता है।

उनकी "आत्तिच्चूडि', 'कोनड्रेय वेन्दन', छोटे बच्चों के लिए तथा 'मूदुरै' बड़े बच्चों के लिए लिखी गई हैं। सभी रचनाएं उपदेशात्मक प्रवृत्ति की हैं - वे उस बुनियादी ज्ञान की व्याख्या करते हैं जो सांसारिक जीवन को नियंत्रित करता है। उक्त रचनावों में रोजमर्रा की जिंदगी के लिए उपयोगी, पालन करने और पालन न करने योग्य, सही और गलत कार्यों की एक सूची सरल और छोटे वाक्यों में व्यवस्थित है। बच्चों का समूह एक विशिष्ट धुन के साथ इन कविताओं को सुनाता है जो हमेशा बचपन के दिनों की यादें ताजा कर देता है।

औवैयार की साहित्यिक देन की विशेषताएं:

प्रायः कवियों और लेखकों अपनी साहित्यिक क्षमता को व्यक्त करने की उत्सुकता में दुरूह, क्लिष्ट, भाषा-शैली को अपनाते हैं। निपुणता के एक निश्चित स्तर को प्राप्त करने के बाद ही कोई इसका अर्थ समझ सकता है या साहित्यिक युक्तियों की जटिलताओं की सराहना कर सकता है। कई लोग इस स्तर तक कभी नहीं पहुंच पाते हैं, इसलिए हमारा अपना साहित्यिक खजाना उनके लिए एक बंद अध्याय बन जाता है। परंतु अव्वयार ने सरल, सारस एवं सहज भाषा शैली को अपनाकर अपनी रचनावों को अधिक प्रभावशाली बनाया है।

अब तक सभी समाज सुधारकों ने अलग-अलग सफलता के साथ वयस्कों तक नैतिक संदेश संप्रेषित करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। औवैयार ने एक अलग रणनीति अपनाई। उन्होंने हमारी भावी पीढ़ि, खुले विचारों वाले और अधिक ग्रहणशील, नन्हे बच्चों को अपनी नैतिक सलाह देती है। 'आत्तिच्चूडि', 'मूदुरै', 'कोनड्रेय वेन्दन', नलवझी उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं . सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य मूल्यों को एक पंक्ति में मानकर, तिरुवल्लुवर के तिरुक्कुरल के सारांश को 'आत्तिच्चूडि' के माध्यम से प्रस्तुत कर औवैयार ने अपनी उत्कृष्ट शैली की सादगी के साथ-साथ उनके संदेशों की गहराई को दर्शाया है। यथा: दान करना पसंद कर, अध्ययन करना जारी रखो, आदि। यह आश्चर्य की बात है कि औवैयार ने अपनी छोटी लेकिन प्रभावशाली छोटी कविताओं के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की और हजारों वर्षों से भी अधिक समय तक लोगों के दिलों में बने रहे। इस पर तमिलों को गर्व होता है।

मूदुरै :

मूदुरै औवैयार द्वारा रचित एक तमिल उपदेशात्मक नीति ग्रंथ है। इसे मूदुरै (पुराना + पाठ/कथन)। अर्थात 'वृद्ध वचन' कहा जाता है क्योंकि इसमें हमें सदियों से मिले सार्वभावमीक सार्वकालिक जीवन-नैतिक मूल्य, गतिविधियां समाहित हैं। इसका दूसरा नाम 'वाक्कुण्डाम' भी है। इस रचना की शुरूआत मंगलाचरण से किया गया है। उक्त मंगलाचरण का प्रथम शब्द 'वाक्कुण्डाम' शब्द से करने के कारण यह नाम प्राप्त हुआ है। ईशवंदना में भगवान गणेश एवं लक्ष्मी की स्तुति की गई हैं। यह ग्रंथ 'वेणबा' नामक छंद में लिखा गया मुक्तक है।

औवैयार के रूपकों की प्रासंगिकता या सरलता की तुलना करना कठिन है। 'मूदुरै' की कविता में पहली दो पंक्तियाँ उपमा हैं, जो सामाजिक परिवेश से ली गई उदाहरण है और अगली दो पंक्तियाँ अवधारणा का प्रतिनिधित्व करती हैं। अथवा पहली दो पंक्तियाँ अवधारणा का प्रतिनिधित्व करती हैं और अगली दो उपमा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जाति भेद का विरोध एवं जाति की नई परिभाषा:

विश्व भर में लंबे समय से प्रचलित समाजिक कमजोरी, जातिगत मतभेद जोकि सामाजिक अशांति और उथल-पुथल का स्रोत हो सकता है उसे दूर करने के लिए औवैयार ने साहित्यिक रूप का सफल उपयोग किया है। निम्नलिखित उदाहरण में, जाति भेद की बुराइयों को बहुत स्पष्ट तरीके

से इंगित कर जाति की नई परिभाषा देती है। उन्हें जाति, धर्म या धन के आधार पर लोगों को श्रेष्ठ और निम्न के रूप में वर्गीकृत करना वांछनीय नहीं है।

उनके अनुसार, मानव मानव के बीच भेद-भाव उत्पन्न करनेवाली जाति से छुटकारा पाने के लिए मनुष्यों को केवल दो कुल/वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, उच्च और निम्न। यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपनी संपत्ति दूसरों के साथ साझा करने के लिए कितने इच्छुक हैं। अपनी संपत्ति दूसरों के साथ, अर्थात दीन-दुखी, जरूरतमन्दों के साथ साझा करनेवाले उच्च कुल के हैं अन्यथा निम्न कुल के हैं।

"जाति इराणडोलिय वेरिल्लै"

शिक्षा

शिक्षा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। इसलिए 'मूदुरै' ने शिक्षा को प्राथमिकता दी है। शिक्षा के बिना राजा का कोई वैभव नहीं होता। 'मूदुरै' शिक्षित और अशिक्षित राजा की तुलना करते हुए व्यक्त करता है कि विद्वान, अशिक्षित राजा से भी अधिक सम्माननीय, श्रेय और गौरवशाली होता है क्योंकि राजा का गौरव, सम्मान केवल अपने राज्य तक सीमित है तो विद्वान का सम्मान, आदर तथा प्रतिष्ठा सर्वत्र होता है।

"मन्ननुम मासुअरक् कट्टरोनुम सीरतूक्किन
मन्ननिन कट्टरोन सिरप्पुडयन मन्नरक्कुत्
तंदेसम अल्लाल सिरप्पिल्लै; कट्टरोरक्कुच्
सेन्ड्रइडम एल्लाम सिरप्पु।" ('मूदुरै'-29)

राजा चाहे धन और जीवन शैली में श्रेष्ठ हो सकता है। परंतु वास्तव में शिक्षित, विद्वान राजा से भी श्रेष्ठ है कहकर शिक्षा के महत्व को साबित किया गया है। अर्थात यहाँ यह स्पष्ट होता है कि यदि शिक्षा है तो हम सब कुछ हाजिल कर सकते हैं। अपनी पहचान और प्रतिष्ठा हमें शिक्षा से ही प्राप्त होती है। अर्थात "शिक्षा धनम सर्व धनम प्रधानम।" की पुष्टि हुई है।

इस संदर्भ को आगे बढ़ाते हुए अव्वय कहती है कि शिक्षित ही विद्वान को पहचानकर उन्हें मान सम्मान प्रदान करता है। यह इसलिए कि विद्वान ही विद्वत्ता एवं उसकी महत्ता को समझ सकता है। जिस भांति हंस कमल से भरे तालाब में तैरने से आनंद प्राप्त करता है, उसी भांति, विद्वान शिक्षितों के साथ मिलकर आनंद का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं। इसके विपरीत अशिक्षित

मूर्ख, अशिक्षित मूर्खों के साहचर्य को ही पसंद कर उसी में मुग्ध होकर आनंद लेते हैं। इसे स्पष्ट करने के लिए वे कहती है कि जिस तरह जंगल में कौवे को मांस खाना बहुत पसंद है, उसी प्रकार अशिक्षित मूर्ख, अशिक्षित मूर्खों के साथ रहना पसंद करते हैं। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि विद्वानों को सात्विक हंस तथा अशिक्षितों को जंगली कौवे कहकर शिक्षित लोगों की महत्ता को स्थापित किया गया है।

"नल्ता मरैक्क कयत्तिल नल्अन्नम सेरंदारपोल कट्ट्रारै कट्ट्रारे कामुरुवर; कर्पुइला

मूरक्करै मूरक्कर मुगप्पर; मुदुकाट्टिल
काक्कै उगक्कुम पिणम। ('मूदुरै'-24)

अशिक्षितों की स्तिथि :

मूदुरै का कहना है कि बिना शिक्षा लोग गौरव, मान-सम्मान हासिल नहीं कर सकते हैं। शिक्षित विद्वानों को प्राप्त श्रेय से विमुग्ध अशिक्षित, विद्योपार्जन के बिना शिक्षितों जैसे बर्ताव करने से वे हास्यास्पद का पात्र बन जाते हैं।

इसे समझाने के लिए मोर और पेरू के नृत्य का चित्रण किया गया है। जंगल में एक मोर अपने पंख फैलाये झूल रहा है। मोर की सुंदरता और नृत्य से मंत्र मुग्ध पेरू स्वयं को मोर मानकर नृत्य करने लगता है जोकि हास्यास्पद है। इस दृष्टांत में मोर की तुलना शिक्षित व्यक्ति से और मोर के नृत्य की तुलना शिक्षित व्यक्ति द्वारा लिखी गई कविता से की गई है। उसी भांति पेरू की तुलना अशिक्षित से और उसके खेल की तुलना अशिक्षित व्यक्ति द्वारा लिखी गई कविता से की गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि बिना वांछित योग्यता या कौशल से करने वाले कार्य श्रेयशकर नहीं है।

कानअ मयिलाडक् कन्डिरुंद वानकोली
तानुम अदुवागप् पावित्तु, तानुमतन
पोल्लाच् चिरगै विरित्तु आडिनार पोलुमे
कल्लादान कट्ट्र कवि। (मूदुरै-14)

इस संदर्भ में वे आगे कहती है कि जंगल में बड़ी -बड़ी शाखावों में फूल-फलों से युक्त विशाल पेड़ वास्तव में पेड़ नहीं है। विद्वत सभा में उपस्थित निरक्षर तथा विद्वानों के संकेत अथवा आशय से अनभिज्ञ, उसे समझने में असमर्थ, अशिक्षित व्यक्ति ही सच्चे अर्थ में पेड़ कहने योग्य है। क्योंकि विद्वत सभा में बिना शैक्षणिक ज्ञान के व्यक्ति ही पेड़ के समान खडा रहता है।

मूदुरै शिक्षा की विशिष्टता को सिद्ध करने के लिए यही कहना चाहता है कि अशिक्षित, निरक्षर व्यक्ति मानव प्रजाति के नहीं हैँ। उन्हें पेड़ जैसा ही माना जाएगा।

कवैयागि, कोम्बागि काट्टगत्ते
निर्कुम अवैयल्लअ नल्लअ मरंगल; सबै नडुवे नीट्टुओलै वासिया निन्ड्रान, कुरिप्परिय
माट्टा दवननल मरम। (मूदुरै-14)

निष्कर्ष:

अतः तमिल साहित्य में एक महत्वपूर्ण कवयित्री अव्वैयार ने अपनी रचना 'मूदुरै' में जीवन के प्रत्एक पहलुवों यथा शिक्षा का महत्व, अशिक्षितों की स्तिथि, जाति प्रथा का विरोध, मित्रता, परोपकार, परवर एवं रिश्तेदार की पहचान, गुनीजन का महत्व, आदि जीवन की वास्तविकताओं पर प्रकाश डालकर मानव जीवन को सफल बनाने के मार्गदर्शन प्रदान की हैँ। उन्होंने मानव जीवन के मर्म, ज्ञान और जीवन की बारीकियों को दैनिक जीवन में व्याप्त दृष्टअन्तो के माध्यम से सरल एवं सहज शब्दों में प्रभावोत्पादक शैली में उजागर किया हैं। तमिल साहित्य में अववैयार की अभूतपूर्व योगदान को हमारे जीवन में उतारने में ही इसकी सार्थकता निर्भर होती है।

संदर्भ वेबसाइट्स :

1. https://art.py.gov.in/sites
2. https://tamil.wiki/%20
3. https://www.quora.com
4. https://ta.wikipedia.org
5. https://www.exoticindiaart.com
6. https://ta.wiktionary.org
7. https://www.instagram.com
8. https://www.dailythanthi.com
9. https://www.pothunalam.com
10. https://www.researchgate.in
11. https://www.orusaranam.com